द्वितीय चरण: 1927-1937 (प्रशासन के सिद्धान्तों पर बल)

लोक प्रशासन विषय के विकास के इस दौर में राजनीति - प्रशासन द्विविभाजन के विचार के पुनर्निरीक्षण तथा 'मूल्य मुक्त' प्रबन्ध विज्ञान की उद्भावना की प्रवृत्ति दिखायी देती है। इस युग की प्रमुख मान्यता यह रही है कि प्रशासन के कुछ सिद्धान्त होते हैं जिनका पता लगाना और उनका समर्थन करना विद्वानों का काम है। इस नयी मान्यता को लेकर डब्ल्यू. एफ विलोबी की पहली पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफ पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन' (Principles of Public Administration, 1927) 1927 में प्रकाशित हुई। विलोबी की पुस्तक का शीर्षक ध्यान देने योग्य है। वे इस बात में पूर्ण विश्वास रखते थे कि लोक प्रशासन में अनेक सिद्धान्त हैं और इनको कार्यान्वित करने से लोक प्रशासन में सुधार हो सकता है।

इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने वाली रचनाओं में उल्लेखनीय नाम हैं—मूने तथा रैले द्वारा लिखित 'प्रिंसिपल्स ऑफ ऑर्गेनाइजेशन' (Principles of Organization), हेनरी फेयोल द्वारा लिखित 'इण्डस्ट्रियल एण्ड जनरल मैनेजमेण्ट' (Industrial and General Management), लूथर गुलिक तथा उर्विक द्वारा लिखित 'पेपर्स ऑन दी साइंस ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन' (Papers on the Science of Administra tion) तथा मेरी पार्कर फॉले द्वारा लिखित 'क्रिएटिव एक्सपीरियन्स' (Creative Experience) | इन विद्वानों का दावा था कि प्रशासन में सिद्धान्त होने के कारण यह एक विज्ञान है। गुलिक और उर्विक ने प्रशासन के सिद्धान्तों को 'पोस्डकोर्ब' (POSDCORB) में समाहित किया। इस दौर में वैज्ञानिक प्रबन्ध के नए सम्प्रदाय के समर्थक लोक प्रशासन के अग्रणी चिन्तकों ने लोक प्रशासन के कुछ ऐसे सिद्धान्त तलाश करने आरम्भ किए जो सभी पर समान रूप से लागू हो सकें। यह युग लोक प्रशासन में सिद्धान्तों का स्वर्ण युग कहा जाता है।तृतीय चरण : 1938-1946 (प्रशासनिक सिद्धान्तों को चुनौती)

लोक प्रशासन के विकास के तीसरे दौर का प्रारम्भ दूसरे चरण में प्रतिपादित यान्त्रिक दृष्टिकोण के विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया से हुआ। प्रशासन के तथाकथित सिद्धान्तों को चुनौती दी गईऔर इन्हें 'कहावतें' कहा जाने लगा। उसी समय सामाजिक शक्तियों और आवश्यकताओं के निरन्तर दबाव के कारण उद्योगों में भी वैज्ञानिक प्रबन्ध को व्यापक और मानवीय बनाने की प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी थी। इस सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान प्रसिद्ध हॉथोर्न प्रयोगों का रहा। कार्य दलों पर केन्द्रित इन प्रयोगों ने कामगारों के उत्पादन पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक उपकरणों के शक्तिशाली प्रभाव का स्पष्ट प्रदर्शन करके वैज्ञानिक प्रबन्ध सम्प्रदाय की जड़ें हिला दीं। संगठनात्मक विश्लेषण के इस दृष्टिकोण ने लोगों का ध्यान औपचारिक संगठन में अनौपचारिक संगठन का प्रभाव, नेतृत्व, संगठन के परिवेश में गुटों के बीच पारस्परिक संघर्ष और सहयोग की ओर खींचा। इसने संगठनात्मक चिन्तन की 'मशीनी' धारणा की सीमाएं इंगित करके संगठनों में मानवीय सम्बन्धों के अत्यन्त महत्वपूर्ण रूप को दर्शाया। चेस्टर बर्नार्ड ने 1938

में 'दी फंक्शन्स ऑफ दि एक्जीक्यूटिव' (The Functions of the Executive) में संगठनात्मक विश्लेषण हेतु मनोवैज्ञानिक एवं में व्यवहार पर आश्रित उपकरणों पर बल दिया। 1946 में प्रकाशित अपने एक निबन्ध में हर्बर्ट साइमन ने प्रशासन के सिद्धान्तों की हंसी उड़ाते हुए उन्हें 'कहावतों' की संज्ञा दी।चतुर्थ चरण 1947-1970 अनुशासनात्मक अध्ययन पर जोर)

लोक प्रशासन के विकास के चतुर्थ चरण की दृष्टि से हरबर्ट साइमन तथा रॉबर्ट डहल के नाम उल्लेखनीय हैं। हरबर्ट साइमन की रचना 'ऐडमिनिस्ट्रेटिव बिहेवियर' (Administra. tive Behaviour, 1947) लोक प्रशासन के विकास की यात्रा में मील का पत्थर है। साइमन के दृष्टिकोण ने लोक प्रशासन को मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान से जोड़कर इसके अध्ययन क्षेत्र का विस्तार कर दिया। उसने श्रेणीगत प्रशासन सिद्धान्त तथा राजनीति प्रशासन द्विविभाजन दोनों को प्रशासनिक चिन्तन और व्यवहार में अस्वीकार कर दिया। साइमन ने दो परस्पर सम्बन्धित धारणाओं का प्रतिपादन किया। एक धारणा प्रशासन का एक विशुद्ध विज्ञान विकसित करने में लग गयी जिसके लिए सामाजिक मनोविज्ञान का ठोस धरातल अपेक्षित था। दूसरी धारणा प्रशासन के मानवीय पहलुओं तथा लोक नीति के आदेशीकरण से सम्बद्ध रही। इसके लिए राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजविज्ञान का व्यापक ज्ञान अपेक्षित समझा गया।

1947 में रॉबर्ट डहल ने अपने एक निबन्ध में यह सिद्ध किया कि लोक प्रशासन विज्ञान नहीं है और प्रशासन के विज्ञान के विकास में तीन बाधाएं हैं प्रथम, विज्ञान मूल्य मुक्त होता है जबकि हर हालत में मूल्य प्रशासन को प्रभावित करते हैं, द्वितीय प्रशासन के अध्ययन में मानव व्यवहार का अध्ययन करना जरूरी और मानव व्यवहार सभी सम्भव विभिन्नताओंऔर अनिश्चितताओं से भरा होता है तथा तृतीय, इसमें सीमित राष्ट्रीय और ऐतिहासिक सन्दर्भों से लिए गए मात्र कुछ उदाहरणों के आधार पर ही सार्वभौमिक सिद्धान्तों को गढ़ने की प्रवृत्ति होती है।

(5) पंचम चरण: 1971 से वर्तमान (नवीन लोक

प्रशासन)

लोक प्रशासन के विकास के इस चरण में निम्नलिखित प्रवृत्तियां उभरी हैं

1. प्रशासन को मुख्य रूप से किसी संगठन के भीतर के लोगों और उससे बाहर के लोगों के बीच निश्चित अवधि के भीतर होने वाली अनवरत अन्तः क्रिया की प्रक्रिया के रूप में देखा जाने लगा।

2. लोक प्रशासन तथा निजी व्यवसाय प्रशासन के अलग-अलग अध्ययनों को एक ही संगठित विज्ञान में बदल देने की प्रवृत्ति उभरी जिसके सिद्धान्त और धारणाएं लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं।

3. विविध सामाजिक परिवेश और पर्यावरण में प्रशासनिक व्यवस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर।

4. कम्प्यूटर युग के आरम्भ के साथ कम्प्यूटरों तथा दूसरे यन्त्रों की सहायता से मानव मस्तिष्क की निर्णय करने वाली तथा समस्याओं को सुलझाने वाली प्रक्रिया को समझने का प्रयास होने लगा।

5. अन्तःअनुशासनात्मक अध्ययन पर जोर।

6. अनेक स्तरों पर राजनीति और प्रशासन की परस्पर एक-दूसरे में व्याप्ति।

लोक प्रशासन के विकास के इस चरण में योगदान देने •वाले विद्वानों में वाल्डो तथा फ्रेड डब्ल्यू रिग्स के नाम उल्लेखनीय दिया है। विकासशील देशों के समाजों के अध्ययन के लिए